eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

भारत के पितामह दादा भाई नारौजी का राजनीतिक चिन्तन

[1]डॉ0 अभिलाष सिंह यादव
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, महामाया राजकीय महाविद्यालय, धनूपुर, हण्डिया, प्रयागराज

Received: 20 Jan 2023, Accepted: 28 Jan 2023, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2023

Abstract

दादा भाई नारौजी ने लम्बे समय तक एक युग विशेष का प्रतिनिधित्व किया है। उस युग को उदारवादी मान्यताओं से परिपूर्ण युग स्वीकार किया गया है। अध्यापक के रुप में जीवन का प्रारम्भ करके उन्होंने देश के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को विविध रुपों में प्रभावित किया। उनमें उदार मान्यतायें अपना आश्रय पाती थीं।

मुख्य शब्द– भारत के राजनीतिविद, राजनीतिक विचार, दादा भाई नारौजी एवं राजनीतिक चिन्तन।

Introduction

वह एक महान् आत्मा थे, उनकी कभी किसी से शत्रुता नहीं हुई। एक प्रतिष्ठित महान व्यक्ति के रुप में तथा जनता के सेवक के रुप में वह मानतम् आदर्श बने। वह भारतीयों के समक्ष एक सच्चे पथ–प्रदर्शक के रुप में प्रदर्शित हुये।[1] अपनी इस सौम्य और उदार प्रवृत्ति के कारण वह ब्रिटिश संसद के निर्वाचन में सफल हुये। उन्होंने संसद के माध्यम से, भाषणों एवं लेखों के माध्यमों से, गोष्ठियों और सभाओं के माध्यमों से ब्रिटिश जनता को भारतीय आवश्यकताओं के प्रति सदैव जागरुक रखा। दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी द्वारा संचालित आन्दोलन का भी उन्होंने मार्ग–दर्शन किया।

नैतिक आदर्शो के प्रतिपालक– दादा भाई नारौजी का जीवन पूर्व रुपेण सात्विक मान्यताओं और उच्च आदर्शो की धरोहर रहा है। उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों की क्षेत्रों में नैतिकता के परिपालन को आवश्यक अनुभव किया। उनकी यह मान्यता थी कि मनुष्य चाहे राजनीतिक कार्यो में भाग ले, अन्यथा सामाजिक कार्यों में, आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करे अन्यथा शैक्षणिक कार्य करें, प्रत्येक कार्य का आधार नैतिकता ही होना चाहिए। यह आदर्श उन्होंने शासन के लिए निर्धारित किया। वह नहीं चाहते थे कि भारतवासी और अंग्रेज अनैतिक सम्बन्धों के माध्यम से निकट आयें। वह तो वास्तवितक प्रेम के लिए नैतिकता को आवश्यक ही मानते थे। किसी भी शासन से भी ऐसी ही अपेक्षा करते थे। अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है, ''राक्षसी शक्ति से साम्राज्य बन सकते हैं। लेकिन यह राक्षसी शक्ति उसे स्थायित्व प्रदान नहीं कर सकती। चारित्रिक शक्ति, न्याय तथा सत्यता ही अकेले साम्राज्य को जीवित रखती है।''[2]

उदारवाद के प्रवक्ता – दादा भाई नारौजी ने 'विरोध के लिए विरोध' की राजनीति को अंगीकृत नहीं किया। उनका सम्पूर्ण जीवन और दर्शन किसी भी प्रकार से हिंसक नहीं रहा। वह मूलरुप से संवैधानिक मान्यताओं के साथ इतने अधिक सामीप्य अनुभव करने लगे थे कि संविधान विरोधी उन्हें कोई भी कार्य उपयुक्त अनुभव नहीं होता था। जवन के संध्या काल में भी उन्होंने उग्रवाद के बल को उपयुक्त अनुभव नहीं किया। वह तो संवैधानिक ढंग से अपनी माँगों को रखते थे तथा उनके हल के लिए प्रयत्नशील रहते थे। तोड़–फोड़ की भाषा से उनका परिचय नहीं हो पाया था।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

दादा भाई नारौजी स्वतन्त्रता प्रेमी थे। वह स्वतन्त्रता को जीवन के विकास का मूलाधार मानते थे। संसद के सदस्य के नाते उन्होंने विचाराभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की आवश्यकता पर बल दिया। सन् 1858ई0 में की गई विक्टोरिया की घोषणा के अनुसार उन्होंने भारतीय जनता के लिए समानता की मॉग को प्रस्तुत किया। यहाँ यह स्मरण रखना आवश्यक है कि उन्होंने किसी मॉग को किसी वर्ग–विशेष के लिए प्रस्तुत नहीं किया, वह तो सम्पूर्ण भारतीय समाज के लिए संघर्ष कर रहे थे। भारतीय लोक सेवा की भर्ती के लिए तथा सेना में भर्ती के लिए उन्होंने समानता की शान्तिपूर्ण मॉग करके उदारवादी मनोवृत्ति का परिचय दिया।

वह किसी भी असाध्य मॉग को शासन के सम्मुख नहीं रखना चाहते थे, क्योंकि उनका उद्देश्य किसी भी प्रकार से ब्रिटिश शासन को तंग करना नहीं था। वह तो मधुर और सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्धों के समर्थक थे। इन सम्बन्धों का आधार वह पारस्परिक विश्वास मानते थे। उन्होंने किसी भी वस्तु को अधिकार के रुप में हड़पने की चेष्टा नहीं की, वह तो मधुर सम्बन्धों के लिए व्यग्र रहते थे। अंग्रेजों के प्रति उनकी उदार आशावादिता कितनी मुखरित है, ''मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि यदि ब्रिटिश जनता एक बार यह समझ कर सन्तुष्ट हो जाये कि हम स्वशासन प्राप्ति के लिए दृढ़ हैं तो उसे वह स्वीकार हो जायेगा। मैं उस सुखद दिन के देखने के लिए शायद न रहूँ लेकिन मैं अच्छे परिणाम की प्राप्ति में निराश नहीं हूँ।''[3]

भारत और अंग्रेजों के हित एक दूसरे के पूरक–दादा भाई नारौजी के राजनैतिक चिन्तन का मुख्य आधार यह रहा कि उन्होंने इस देश के हित को अंग्रेजों के हितों के विरोधी नहीं माना। वह यह निश्चित रुप से स्वीकार करते थे कि भारतीय जनता के हित ब्रिटिश शासन से ही सम्बद्ध हैं। उन्होंने अपने जीवन का विश्वास किया था, फलतः वह ब्रिटिश शासन की भलाई के लिए और भारतीय जनता की भलाई के लिए समान रुप से प्रयत्नशील रहे। उन्होंने 'क्राउन' के प्रति उसी तरह निष्ठा अभिव्यक्त की, जिस प्रकार उन्होंने इस देश के प्रति अपनी भावनायें अभिव्यक्त की थी। भारत में अंग्रेजों ने शिक्षा के प्रसार से अज्ञान के अंधकार को मिटाने का उपक्रम किया है। उनके प्रशिक्षित प्रशासकों ने न्याय और प्रशासन की स्थिति में सुधार किया है, उनके प्राविधाक ज्ञान ने भारत में प्रगति के द्वार खाले हैं तथा प्रकाश के सूरज को चमकाया है। उन्होंने कलकत्ता में सन् 1886ई0 को आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में अपनी इसी मान्यता को प्रस्तुत किया। ''यह कितना सौभाग्य है कि हम आज ऐसे शासन के अन्तर्गत रहते हें जो ह्रदय से उदार है।इंगलैंड की सम्राज्ञी के शासन के अन्तर्गत ही हम यहॉ मिलने के अवसर पाते हैं। हमें अपनी बात कहने में, एक स्थान पर इकट्ठा होने में किसी प्रकार की भी असुविधा नहीं होती। हमारे मार्ग में किसी प्रकार की भी अड़चन नहीं डाली जाती।'' दादा जी यह सदैव स्वीकार करते थे कि भारत की प्रगति और उसका हित इंगलैंड से सम्बद्ध है।

इस दृष्टिकोण को सफल बनाने के लिए वह भारतीय नागरिकों से यह आज्ञा करते थे कि उन्हें पूर्ण निष्ठा और भक्ति के साथ अंग्रेजों के साथ चलना चाहिये। लाहौर कांग्रेस के अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए उन्होंने कहा था, ''मेरी इस कांग्रेस संस्था से यह आशा और प्रार्थना है कि संगठित होकर संयम के साथ अंग्रेजी शासन के प्रति निष्ठा रखे। देश के प्रति भक्ति की भावना के आधार पर ही प्रगति पथ पर बढ़ना चाहिये। यदि हम अपने दायित्व को सम्पन्न कर सकें तब ब्रिटिश

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

जनता हमारे प्रति निश्चित रुप से मित्रता का हाथ बढ़ायेगी। इसी में सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण होगा।'' इस कल्याण की भावना के साथ दादा भाई नारौजी जिस प्रकार भारतीयों से यह आशा करते थे कि वह अंग्रेजी शासन के प्रति निष्ठावान रहें, उसी प्रकार वह अंग्रेजों से भी उदार रहने की आवश्यकता पर बल देते थे। वह अंग्रेजों को एक न्याय–प्रिय तथा सत्य–प्रिय जाति के रुप में देखते थे।

अंग्रेजी साम्राज्य के हित के लिए वह सदैव जागरुक और प्रयत्नशील रहे, क्योंकि अंग्रेजी शासन उनके अनुसार स्वयं भारत के हित में भी है। इस शासन का बना रहना दोनों जातियों की प्रगति, सद्भाव और शान्ति के लिए आवश्यक है।[4] नारौजी यह स्वीकार करते थे कि यह शासन यदि अच्छी, कुशल, उदार और निष्पक्ष नीतियों का पालन करता रहेगा तब तक इसका भविष्य भी सुरक्षित रहेगा, लेकिन यदि इस शासन ने 'लूटने की नीति' का अनुसरण किया तब यह अहितकारी सिद्ध होगा। अन्याय से शक्तिशाली शासन भी डूब जाता है। वह अंग्रेजों से कहा करते थे कि विजयी के रुप में भी तुम्हारे अधिकार ही नहीं है, कुछ दायित्वों भी है। भारतीय यह भी आशा करते हैं कि उन्हें इस शासन में अपनी बात कहने का अधिक अवसर मिलेगा।[5]

ब्रिटिश शासन के आलोचक मित्र– यह सही है कि दादा भाई नारौजी ने ब्रिटिश शासन का भी अहित नहीं चाहा, लेकिन यह भी उतना ही सही हे कि उन्होंने भारतीय जनता के कष्टों, दुःखों, अवसादों और परेशानियों से कभी भी ऑखें नहीं फेरीं। भारत के साधारण नागरिक के मन से अंग्रेज शासन के प्रति किसी प्रकार की दया नहीं थी क्योंकि अंग्रेज विदेशी शासक की तरह अपने आर्थिक हिमों की पूर्ति में इसका यह परिणाम निकला कि यह देश अधिक से अधिक गरीब होता गया। ब्रिटिश संसद के सदस्य के रुप में उन्होंने इस देश की गरीबी की चर्चा करते हुए प्रति व्यक्ति आय 20रु0 प्रति वर्ष बतायी थी, जिस पर एक गम्भीर वाद–विवाद प्रारम्भ हो गया। वह भारत की गरीबी तथा दीन–हीन अवस्था का उत्तरदायित्व अंग्रेजी शासन और उसकी गलत नीति पर ही डालते थे।

वह प्रशासन के क्षेत्र में भारतीयों के साथ की जा रही असमानताओं के पर्याप्त रुष्ट थे। उन्होंने अखिल भारतीया सेवाओं की परीक्षा में भारतीयों को तथा अन्य प्रशासनिक इकाइयों में भारतीयों के लिए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। वह यदि सन् 1883 में लाहौर अधिवेशन के अध्यक्ष के रुप में ब्रिटिश शासन की उदारता और न्याय प्रियता के प्रति अपने आशावादी दृष्टिकोण को अभिव्यक्त कर सकते हैं, तब वह कलकत्ता अधिवेशन (सन्1806) में ब्रिटिश से कुछ मांगने का साहस भी कर सकते हैं। वह अखिल भारतीय सेवाओं में न्यायोचित स्थान दिये जाने के लिए संघर्ष करते रहे, निर्वाचित संस्थाओं में भारतीयों के अधिकाधिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता पर उन्होंने बल दिया। वह मूल रुप से भारत और ब्रिटने के आर्थिक सम्बन्धों को नैतिक दृष्टि से सबल बनाना चाहते थे।

भारत की गरीबी को देखकर वह दुःखी होते थे, फलतः अंग्रेजी शासन को जगाने के लिए वह सदैव प्रयत्न करते रहते थे। भारतीय जनता को संवैधानिक रुप से आन्दोलन करने केलिए भी उन्होंने कभी मना नहीं किया। बंग–भंग के बाद बढ़ते हुए भारतीय जनता के आक्रोश को प्रकट करने के लिए उन्होंने स्वीकृति दे दी, किन्तु वह इस देश को हिंसा के मार्ग पर ले जाने के लिए कभी भी तैयार नहीं थे। लेकिन वह बलिदान के द्वेष के मिश्रण को स्वीकार नहीं करते थे। उन्होंने देश के उत्थान के लिए बलिदान की आवश्यकता पर बल दिया। वह आन्दोलन की भाषा को समझते थे और

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 6, Issue 01, Jan 2023

अपने जीवन के संध्याकाल में उन्होंने भारतीय जनता को आन्दोलन के लिए भी आन्दोलन के लिए भी अनुप्रेरित किया। स्वदेशी, स्वराज्य(स्वशासन) राष्ट्रीय शिक्षा तथा बहिष्कार जैसे प्रस्ताव दादाभाई नारौजी की उपस्थिति में ही काग्रेस ने पास किये।

उन्होंने भारत के हितो को जिस रुप में प्रस्तुत किया उसके आधार पर कोई भी निष्पक्ष आलोचक उनकी पद्धति को भिक्षा वृत्ति की संज्ञा नहीं दे सकता। उन्होंने ब्रिटिश संसद में ब्रिटिश सरकार की नीतियों को ब्रिटिश जनता के अहित का प्रतीक कहा। उस स्थल पर खड़े होकर उन्होंने यह कहा कि इस शासन में भारत का हर प्रकार से पतन हुआ है। उनकी आलोचना का सफल परिणाम सन्1899 की भारत सम्बन्धी संसदीय समिति का निर्माण है। सर विलियम बैडरबर्न जैसे उदार हृदय अंग्रेजों का इस समिति को ही नैतिक समर्थन प्राप्त नहीं था, बल्कि दादा भाई नारौजी के प्रत्येक भारत सम्बन्धी कार्य में उनका नैतिक समर्थन उपलब्ध था। वह आलोचक थे, विध्वंसक नहीं: वह दिशा निर्देशक थे, याचक नहीं, वह राजनैतिक नैतिकता के मसीहा थे, उच्छृङ्खल राजनीतिज्ञ नहीं।

सन्दर्भ सूची :–

1 चिन्तामणि सी0वाई0 इण्डियन पोलिटिकल सिन्स न्यूटिनी। पृष्ठ सं0–36
2 दादा भाई नौरोजी पावर्टी एण्ड अन–ब्रिटिश रुल इन इण्डिया। पृष्ठ सं0–301
3 पार्वती टी0वी0 मेकर्स ऑफ मार्डन इण्डिया। पृष्ठ सं0–16
4 नौरोजी दादा भाई स्पीच्ज एण्ड राइटिंग। पृष्ठ सं0–57
5 नौरोजी दादा भाई पावर्टी एण्ड अन–ब्रिटिश रुल इन इण्डिया। पृष्ठ सं0–202